में आता है। फतिहगढ़ साहिव गुरूद्वारे का नाम हैं जो दशमेश पिता के पुत्र फतिहसिंह व जोरावर सिंह को समर्पित है। वैसे सरहिंद का इतिहास वहुत प्राचीन है। इस नगर का इतिहास संघोल के आस-पास के जैन व बौद्ध काल से संबंधित बहुत स्थल हैं। इस नगर का नाम मुस्लिम इतिहास में कई वार आया है। सरहिंद मुगल काल में एक प्रमुख सूवा था। बावर से पहले भी यह नगर बहुत आलीशान माना जाता था। गुरू गोबिन्द सिंह जव गुरूपुरी पधारे तो बंदा बहादुर को दक्षिण से पंजाब भेजा। उसने जितने मुस्लमानों के शहर थे सब को खण्डहरों में वदल दिया। इस का प्रमाण सुनाम, समाना, सुढोरा व सरहिंद है।

फिर सिक्ख राज आया, तब गुरूओं से संवंधित स्मारकों को संभालने का मामला सामने आया। यह क्षेत्र पटियाला राज्य में पडता था। जो सिक्ख नरेश था। पटियाला नरेश महाराजा भूपेन्द्र सिंह ने यहां के प्रसिद्ध गुरूद्वारा का निर्माण करवाया। आज भी सरहिंद में छोटी छोटी ईंटों के मकान मिलते हैं।

सरहिन्द में हिन्दू मंदिर के साथ साथ जैन धर्म का एक महान तीर्थ चक्रेश्वरी देवी का प्रसिद्ध मंदिर व अमृत कुण्ड इन गुरूद्वारों के पास हैं। माता चक्रेश्वरी देवी भगवान ऋृषभदेव की यक्षिणी देवी हैं। कहा जाता है जव महाराजा करम सिंह पटियाला बच्चों की शहादत का स्थान ढूंढ रहे थे तो माता चक्रेश्वरी देवी ने उन्हें वह स्वप्न में दर्शन देकर यह स्थान वताया जहां उनका संस्कार हुआ था। माता चक्रेश्वरी देवी का मंदिर पृथ्वीराज चौहान के समय वना। जव मध्यप्रदेश के कुछ खण्डेलवाल परिवार कांगडा तीर्थ की यात्रा करते इस स्थान पर पहुंचे। वह माता की प्रतिमा साथ लाए थे। उन्हें स्वपन में माता ने आदेश दिया "तुम यहां वस

जाओ। मेरी पिंडी यहां स्थापित कर दो।'' भक्तों ने आदेश का पालन करते हुए मंदिर स्थापित कर दिया। बंदा बहादुर के हमले के पश्चात् यह लोग सुनाम आ गए।

पास ही मुसलमानों का तीर्थ रोजा शरीफ है। जहां मेला लगा रहता है। देश विदेश से यात्री आते हैं। इस क्षेत्र में उच्चा पिंड संघोल, बोद्ध धर्म, का प्रमुख केन्द्र है। जहां ५वीं सदी से पहले की कला, सिक्के, प्रमिमाएं मिलती हैं। एक स्तूप भी महाराजा अशोक द्वारा निर्मित है। सरहिंद के इस गुरूद्वारे में सारे भारत वर्ष व विश्व के अन्य देशों से श्रद्धालु तीन दिन के भव्य मेले में आते हैं। भयंकर सर्दी में लाखों लोग इस स्थान पर पहुंच कर इतिहासक गुरूद्वारों के दर्शन करते हैं। श्री हसीजा ने इस समारोह को हमारे सम्मान के लिए चुना। इस की विधिवत् सूचना हमें दे दी गई।

समारोह :

फतिहगढ़ साहिब की धरती जिस का कण-कण शहीदों के खून से पवित्र है। वहां एक भव्य समारोह का आयोजन भाषा विभाग ने सानिध्य में किया गया। यहां एक पुस्तक 'प्रदर्शनी विभाग ने लगाई। लोक संपंर्क विभाग व विभिन्न विभागों ने अपने विभागों की प्रदर्शनीयां लगाई थी। स्टेज पर एक कवि दरवार व ढाडी दरवार का आयोजन किया गया। ढाडी पंजाव की लोक परम्परा है जिस में प्राचीन साजों द्वारा धार्मिक व लोक संगीत प्रस्तुत किया जाता है। यह कथा वाचकों की पंजावी किस्म है जो वीर रस की कविताओं का गान करते है। कई बार विना साज के भी यह भजन गाते हैं। प्राचीन भारत में जो काम भाट लोग करते थे उसी तरह की एक परम्परा है। प्राचीन काल में युद्ध क्षेत्रों में सैनिकों को उत्साहित करने के लिए यह लोग काम करते थे।

इसी परम्परा का निर्वाह आज भी होता है। इसे पंजाद के लोक गीत का भाग भी माना जाता है।

यह मेला दिसंवर में आता है। भयंकर सर्दी में लोग अपने शहीदों को नहीं भूलते। सच्च भी यही है कि वही कौमें जिंदा रहती हैं जो अपने शहीदों को याद रखती हैं। इसी स्मृति में यह भव्य आयोजन होते हैं। जिस में राजनैतिक, धार्मिक व समाजिक संस्थाएं वढ़ चढ़ कर भाग लेती हैं। हमारा सम्मान समारोह आयोजन का भाग था। भाषा विभाग के सभी अधिकारी, कर्मचारी इस आयोजन में लगे थे। इस भव्य समारोह में भाषा विभाग पंजाव ने हमारे सम्मान किया।

समारोह आयोजक ने सर्व प्रथम यह वताया गया कि भाषा विभाग पंजाव आज पंजाव के इन दो जैन विद्वानों को प्रस्तुत करने जा रहा है जिन्होंने गत २५ वर्षों से जैन ग्रंथों को पंजावी भाषा में २५०० वर्ष का इतिहास में पहली वार ५० पुस्तकों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यह प्रयत्न संसार के इतिहास में पहली वार हुआ है।

इन दो विद्वानों ने जीवन का एक भाग पंजावी जैन साहित्य को समर्पित किया है। हम पंजाव सरकार व भाषा विभाग पंजाव की ओर से इनका सम्मान करके स्वय को गौरवान्वित महसूस करते हैं। इस समारोह के सभापति प्रसिद्ध उद्योगपति व पनसप के चेयरमैन स० कृपाल सिंह लिवड़ा थे। उन्होंने मेले के प्रथम दिन मेले में स्थापित सभी प्रदर्शनीयों का उद्घाटन किया। उन प्रदर्शनीयों को देखा। फिर मंच पर विराजित हुए। समय कुछ समय के लिए रुक गया। हमारे नाम मंच पर आने के लिए श्री हर्सीजा ने पुकारा। हम मंच पर आये तो डायरैक्टर साहिव व मुख्य अतिथि ने हमारा सम्मान किया। हमें विशिष्ट अतिथि के साथ विठाया गया।

फिर श्री मदन लाल हसीजा जी निर्देशक भाषा विभाग ने हमारा परिचय व हमारी साहित्यक यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में किया। इस के पश्चात् एक भाई ने भाषा विभाग पंजाव की ओर से तैयार अभिनंदन पत्र हमारे सम्मान में पढ़ा। इस को प्रकाशित कर लोगों में बांटा गया। फिर मुख्य मेहमान सरदार कृपाल सिंह लिबड़ा मंच पर खड़े हुए। उन्होंने सर्व प्रथम हमें अभिनंदन पत्र प्रस्तुत किया। इस के पश्चात् उन्होंने भाषा विभाग पंजाव की ओर से दोनों को एक एक शाल ओढ़ाया। इन शालों पर पंजाब का मान चित्र प्रकाशित था, जो भाषा विभाग का चिन्ह है।

फिर स० लिवडा ने हमारे सम्मान में कुछ शब्द कहे। उन्होंने हमें मुवारिकवाद देते हुए, भाषा विभाग पंजाव की सभी प्रशंसा की जो पंजावी भाषा के विद्वानों को ढूंढ कर सम्मानित करता रहता है।

हमारी ओर से धन्यवाद के रूप में विशिष्ट अतिथियों को हमारे प्रसिद्ध प्रकाशनों के सेट भेंट किए गए। यह समारोह छोटा था या वडा यह मेरे चिंतन का विषय नहीं। पंजाव सरकार ने हमारे साहित्य व जैन धर्म का सम्मान किया था। इस लिए हमारे लिए यह समारोह महत्वपूर्ण था कि दो पंजावी जैन साहित्य के विद्वानों को उनके अपने राज्य में सम्मानित किया जा रहा था। मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन ने हम दोनों की ओर से पंजाव सरकार के भाषा विभाग का धन्यवाद करते हुए कहा गया "यह हमारा सम्मान नहीं, वल्कि प्रभु महावीर व जैन धर्म के सिद्धांतों का सम्मान है। जो हर युग में शाश्वत है।"

अभी २ अप्रैल २००३ को गोबिन्दगढ़ के पत्रकार ने हमारा पंजावी साहित्य ओमान में स्थित इंडियन सोशल कलचर सोसाईटी मस्कट को भेंट किया। सोसाईटी के अध्यक्ष

श्री के. एम. सिन्हां ने इस साहित्य का गर्म-जोशी से स्वागत किया। हमें सोसाईटी का मोमेंटो भी भेजा। यह भी एक यादगारी स्मृति है।

२

पूज्यनीय महाश्रमणी, जैन ज्योति, जिन शाषण प्रभाविका साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की परम्परा व उनका शिष्य परिवार

महाश्रमणी, उपप्रवर्तनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज जैन श्रमणी परम्परा में विशिष्ट स्थान रखती थीं। आप का संबंध प्रवर्तनी श्री पावती जी महाराज से संबंधित था। स्व० अगर चन्द नाहटा की दृष्टि में साध्वी पावती जी महाराज हिन्दी की प्रथम जैन महिला लेखिका थीं। उनका विशाल शिष्य परिवार था। वह महान धर्म प्रचारिका थीं। उन्होंने अपने समय के सभी धर्म प्रचारकों से धर्म चर्चा की थी। उन्होंने महाराज नाभा के प्रश्नों के उत्तर दिए थे। महाराजा नाभा जैन साधू साध्वीयों से व्यर्थ में ही नफरत करता था। आप ने वडी हिम्मत से नाभा पहुंच कर देवी मंदिर दयाल चौंक में प्रवचन शुरू किया। इस की खबर महाराजा को पहुंची। महाराजा ने अपने राजपुरोहित के हाथ कुछ प्रश्न लिख कर भिजवाए। उनका उत्तर आप ने विद्वता पूर्ण ढंग से दिया। आप का महाराजा ने सम्मान किया। फिर पूज्य अमरसिंह महाराज पधारे। इसी प्रकार श्वेताम्वर मूर्ति पूजक आचार्य विजयवल्लभ भी यहां पहुंचे थे। साध्वी जी ने ४० से ज्यादा हिन्दी जैन ग्रंथों की रचना की थी। इन ग्रंथों को पढ़ कर उनकी विद्वता का पता चलता है। आप वहुभाषा विध थीं। आगमों व दूसरे धर्मों के साहित्य पर आप का पूर्ण अधिकार था।

आप की शिष्या राजमति जी महाराज थीं। जिन्होंने राजमति जैसा उदाहरण प्रस्तुत किया। आप की शादी आप की मर्जी के विरूद्ध कर दी। आप ने अपने वैराग्य को शादी के बाद जारी रखा। आखिर ससुर व पीहर दोनों पक्षों को झुकना पड़ा। आप साध्वी बनीं। प्रवर्तनी श्री पावर्ती से दीक्षा ग्रहण कर आगमों का सूक्ष्म अध्ययन किया। आप की शिष्या साध्वी श्री ईश्वरा देवी थीं। साध्वी श्री ईश्वरा देवी जी महाराज ने साध्वी पार्श्ववर्ती को दीक्षित किया। साध्वी पार्श्ववती को हमारी गुरूणी को दीक्षित करने का सौभाग्य मिला। इनकी शिष्या गुरूणी प्रवर्तनी राजमति जी के निर्देशन में हुई। आप ने विभिन्न धर्मों के साहित्य का तुल्नात्मक अध्ययन किया। अनेक बार तप किया। अनेकों जीवों को मोक्ष मार्ग पर लगाया।

साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का जीवन क्रांन्तिकारी रहा। आप का जन्म प्राचीन पंजाब की राजधानी लाहौर के सूश्रावक सेठ खजानचन्द्र व माता दुर्गा देवी के यहां २६ जनवरी १६२६ को हुआ। आप को नाम दिया गया लज्जा। जिस दिन आप का जन्म हुआ उस दिन पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पूर्ण स्वराज्य का नारा लगाया था। आप के पिता उस दिन एक लम्बा मुकद्मा जीते थे। उनकी लाज बच गई थी। यह नाम उसका प्रतीक था। घर का वातावरण धार्मिक था। इस का प्रभाव बालिका लज्जा पर भी पड़ा। आठ वर्ष की आयु में उनके एक फोडा निकल आया। यह फोडा समाप्ति का नाम नहीं लेता था। आखिर एक दिन लज्जा ने सोचा कि अगर यह फोडे की तकलीफ दूर हो जाए तो मैं साध्वी बन जाउं। यह संयम के बीज थे जो फूटने शुरू हो गए। आपने प्रतिज्ञा लेने के कुछ समय बाद फोडा समाप्त हो गया। आप पढाई में बहुत होशियार थीं। घर में रह कर

आप ने आठवीं तक पढ़ाई सम्पन्न की। माता पिता दीक्षा लेने के लिए मान रहे थे। पहले आप को कहा गया कि बालिग हो जाओ, फिर संयम ग्रहण कर लेना। पर आप के बालिग होने के पश्चात भी आप के पिता ने आप को आज्ञा प्रदान नहीं की। जैन धर्म का यह नियम है कि किसी भी स्त्री पुरूष को उनके अभिभावक की आज्ञा के बिना साधु नहीं बनाया जा सकता। आखिर १५ अगस्त १९४७ को देश स्वतन्त्र हो गया। भारत पाक बंटवारे में हिन्दू मुस्लिम फसाद शुरू हो चुके थे। लज्जा ने सोचा "माता पिता किसी कीमत पर संयम ग्रहण करने की आज्ञा नहीं देंगे। पर मुझे अपने आत्म कल्याण करना है। संसार में नहीं फंसना।" वैराग्य दृढ़ होता गया। आप घर से पलायण कर बम्बई पहुंच गई। घर में तूफान खड़ा हो गया। आप बम्बई से पालीताना तीर्थ पर पहुंची। जहां पंजाबी धर्मशाला में आचार्य समुद्र विजय विराजमान थे। वहां आप की भेंट अपनी संसारिक बुआ साध्वी दक्ष देव श्री से हुई। आप के माता पिता पंजाब में आप की तलाश कर रहे थे। वह जालंधर पहुंचे। वहां उन्हें पता चला कि लज्जा पालिताना तीर्थ में सकुशल है अगर दीक्षा की आज्ञा देंगे तभी वहां वह पंजाब आ जाऐगी। आखिर माता पिता को अपनी संतान के आगे झुकना पड़ा। वह पालिताना पहुंचे। कुछ दिन तीर्थ यात्रा सम्पन्न कर लज्जा को वापस ले कर पंजाब में आ गए।

दीक्षा :

२७ अक्तूबर १९४७ को लज्जा का संयम का भेष मिला। यह कार्य साध्वी राजमति की नेश्राय में जालंधर छावनी में हुआ। साध्वी बनते ही आप ने जप-तप-स्वाध्याय तीनों का क्रम को जीवन का अंग बना लिया। यह जप तप जीवन में ५४ साल तक चला। बडी से बडी मुस्वित में आप

समता रखना जानती थीं। आप के साहित्यक देन, संस्थाओं के निर्माण के परिचय मैं पीछे दे आया हूं। आप ने बी.ए. पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से पास की थी।

आप का विशाल शिष्य परिवार में २४ से ज्यादा साध्वीयां हैं। आप के शिष्य परिवार में दो साध्वीयां आप की शिष्या हैं। बाकी साध्वीयां आप के शिष्य परिवार की शिष्याएं हैं। आप की दो प्रमुख साध्वीयां में सबसे बडी साध्वी श्री राजकुमारी जी महाराज व दूसरी साध्वी श्री सुधा जी महाराज हैं। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज कई मामलों में प्रथम थीं। हमारी सभी संस्थाओं व प्रकाशनों में उनकी बल्वती प्रेरणा रही है। भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी ने आप को जैन ज्योति पद से अलंकृत किया।

साध्वी श्री स्वर्णकांता जी गुणों की पुंज थीं। अनेकों जीवों पर उन्होंने उपकार किये। अनेकों आत्माओं को सदमार्ग दिखाया। वह संधारा साधिका थी। उनका जीवन अध्यात्म से भरपूर था। मुझे अध्यात्म का अमृत प्रदान करने वाली आप ही थीं। जीवन में स्वाध्याय करते कई बार शास्त्रीय प्रश्नों को समझने होते तो आप की शरण ग्रहण करते। उनका तप-संयम-जप महान था। वह स्पष्ट वादी थीं। बड़े गुरूओं का ध्यान रखना अपना फर्ज समझती थीं।

प्रथम भेंट :

मेरी आप से प्रथम भेंट अम्बाला में जैन स्थानक में २५०० साला महावीर निर्वाण शताब्दी से कुछ वर्ष पहले हुई। आप से पंजाबी साहित्य की चर्चा हुई। आप ने इसकी उपयोगिता को मानते हुए स्वयं सहयोग देने की इच्छा व्यक्त की थी। उन्हीं की इच्छा के अनुरूप हम ने यह साहित्य का सृजन किया। जो उनकी देख रेख में समिति द्वारा प्रकाशित हुआ। सारा पंजाबी साहित्य उनके आर्शीवाद का फल है। जो

२५०० वर्ष में प्रथम बार लिखा गया।

आप का जीवन प्रेरणाओं से भरपूर जीवन है। आप श्री के चरणों में वन्दना दर्शन का लाभ हमें पिछले ३२ वर्षों से प्राप्त होता रहा। हर साल दीक्षा के आयोजन होते। आचार्य श्री आनंद ऋषि व आचार्य देवेन्द्र मुनि जी महाराज का पंजाब में स्वागत करने का उन्हें अवसर मिला। आप की ४०वीं दीक्षा जयंती पर हम ने महाश्रमणी पुस्तक निकाली जिस की भूमिका भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी ने लिखी थी। आचार्य देवेन्द्र मुनि स्वयं उनके अनुशाषण व संयम के प्रशंसक थे।

आप का शिष्य परिवार वहुत सेवाभावी समर्पित है। ३ साल वीमार अवस्था में सेवा कर उन्होंने सेवा की उदाहरण स्थापित की है। सभी कार्यक्रम चले हैं। गुरूणी के सेवा भी लगातार हुई है। सभी साध्वीयां सम्पन्न परिवार से संबंधित हैं। पढी लिखी हैं। प्रवचन कर्ता हैं। अच्छी धर्म प्रचारिन तत्ववेत्त व तपस्विनी हैं।

सभी साध्वीयां हर समय स्वाध्यायरत रहती हैं। सभी अपनी गुरूणी के प्रति समर्पित रही हैं। सारी साध्वीयां अनुशाषित हैं। इन साध्वीयों में तीन साध्वीयों का परिचय देना इस लिए जरूरी है कि वह अपनी गुरूणी के अधूरे कार्य को पूरा करने में सदैव तत्पर रही हैं। इन में प्रमुख हैं साध्वी श्री राजकुमारी जी महाराज, साध्वी श्री स्मृति जी महाराज व साध्वी श्री सुधा जी महाराज।

साध्वी श्री राजकुमारी जी महाराज :

आप साध्वी स्वर्णकांता की प्रमुख तपस्विनी शिष्या हैं। आप तपस्या के साथ स्वाध्याय करना नहीं भूलती। सदैव गुरू चरणों में समर्पण व सरलता का प्रतीक राजकुमारी जी

महाराज का जन्म १९३१ में गुजरांवाला पाकिस्तान में हुआ। आप के पिता सेठ विलायती राम व माता श्री दुर्गा देवी जैन थे। आप का धर्म निष्ट परिवार था। बचपन से ही आप का मन संसार के भोग विलासों से दूर था। आप को यह काम भोग आसार लगते था। आप का भरापूरा परिवार है। विभाजन के पश्चात आप का संसारिक परिवार जालंधर में आ गया।

१९४८ में प्रवर्तनी श्री राजमति का चतुंमास जालंधर में था। यह गुरूणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का प्रथम चतुंमास था। साध्वी जी के प्रवचन सुनने आप अपनी माता जी के साथ हर रोज जाती थीं। आप पर वैराग्य का रंग चढ़ने लगा। इस वैराग्य को सुदृढ़ करने में जालंधर शहर के ही एक सुश्रावक श्री हंस राज जैन ने महत्वपूर्ण योगदान किया। वैराग्य उत्तरोत्तर बढने लगा। आप भी चर्चा में रस लेने लगी। आखिर वह सौभाग्य भरा दिन आया जब आप ने स्वयं को गुरूणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के चरणों में समर्पित कर दिया। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज ने उन्हें साध्वी जीवन के कष्टों के बारे में आप को अवगत कराया। दो वर्ष आप के परिवार वाले आप को समझाते रहे, पर आप पर संसार की वासना अपना असर ने छोड सकी।

१९५० में आपने जालंधर शहर में प्रवर्तनी श्री राजमति जी महाराज के हाथों दीक्षित हुई। प्रवर्तनी श्री ने आप को साध्वी श्री स्वर्णकांता की शिष्या घोषित कर दिया। आप ने प्रवर्तनी श्री के कठोर अनुशासन व वात्सल्य को देखा है। आप आर्कषित व्यक्तित्व की धनी है। सारा जीवन गुरूणी की आज्ञा पर पहरा दिया है। सौभाग्य से आप के शिष्या परिवार भी आप के अनुरूप ही ज्ञान वान है। आप की एक प्रशिष्या श्री चन्दना साध्वी जी ने पंजाबी विश्वविद्यालय

पटियाला से संस्कृत एम.ए. में सारी यूनिवर्सिटी से प्रथम आई है। इस विषय पर आपकी शिष्या को गोलड मैडल जैन स्थानक में स्वयं उप-कुलपति रजिस्टरार ने समर्पित किया। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी की संसारिक भतीजी वीरकांता जी आप की शिष्या हैं।

आप का जीवन सहजता, सरलता व विनम्रता का त्रिवैणी संगम है। महातपस्वी हैं। महान प्रवचन देने में प्रमुख हैं। आप ने स्व० गुरूणी की बहुत सेवा की। आप के जीवन से मुझे आस्था का सबक मिला। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के स्वर्गवास के बाद, आचार्य संसार डा० शिवमुनि जी महाराज ने आप को उपप्रवर्तनी पद से सुशोभित किया। यह समारोह पंचकुला श्री संघ ने सम्पन्न किया गया।

सरलात्मा साध्वी श्री सुधा जी महाराज :

सरलात्मा साध्वी श्री सुधा जी महाराज साध्वी स्वर्णकांता जी महाराज की द्वितीय शिष्या हैं। सांसारिक दृष्टि से उनकी भानजी हैं। गुरूणी श्री सुधा जी महाराज का जीवन रत्नत्रयी की आराधना का जीता जागता प्रमाण हैं। आप जैन धर्म की प्रभावना करने में हर समय तत्पर रहती हैं। उन्होंने मेरे जीवन को बहुत प्रभावित किया है। उन्होंने अपनी गुरूणी का कठोर अनुशाषनात्मक जीवन झेला है। उनका ज्ञान अनुपम है। वह साधना की जीती जागती ज्योति हैं। वह सेवा, साधना व स्वाध्याय में हर समय लीन रहती हैं। स्वाध्याय के अतिरिक्त वह लम्बे समय तप करती रहती हैं। दूसरे लोगों को तप करने की प्रेरणा देती हैं। वह श्रमण संस्कृति की सेवा में हर पल गुजारती हैं। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी के हर कार्यक्रम के आयोजन के पीछे आप का प्रमुख योगदान रहा है। अब अपनी गुरूणी के यश को आगे बढ़ाने में आप का दिमाग काम करता है। इतना बडा साध्वी

परिवार, सभी का मातृ भाव से ध्यान रखना आप को आता है। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज ने अपनी शिष्या को हर परिस्थियों के अनूकूल वनाया। आप ने अपनी गुरूणी को जिस ढंग से वर्षो तक सेवा की है उस का उदाहरण मिलना अन्यत्र दुर्लभ है। संयममूर्ति साध्वी सुधा का जन्म १ अगस्त १९४३ को पट्टी के सेठ त्रिलोक चन्द्र जैन व माता कौशल्या देवी के यहां हुआ। भगवान महावीर के जैन धर्म के प्रति श्रद्धा आप को विरासत में मिली थी। आप को वचपन से ही संसार के काम भोग आसार लगने लगे थे। आप ने घर में रह कर दसवीं की परीक्षा पास की। आत्मा में अंकुरित संयम के वीज आप को गुरू चरणों में ले आए। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का त्यागमय जीवन आप के संयम का उदाहरण वना।

घर वालों से दीक्षा की आज्ञा मांगी। वह दीक्षा की आज्ञा इतनी सरलता से कहां मिलती है। परिजनों ने आप को संसार की भौतिकता का लालच दिया और साध्वी वनने से रोका पर आप ने भी अपनी मौसी का अनुकरण किया। आखिर घर वालों को अपनी प्रिय वेटी सुधा को दीक्षा की आज्ञा देनी पडी। आप ने वैराग्य से पहले घर वालों की विपरीत परिस्थितीयों को सहन किया।

१४ फरवरी १९९५ को वह मंगलमय वेला आ गई, जव आप की मनोकामना पूरी होने वाली थी। इस मंगलमय महोत्सव पर राष्ट्रसंत उपाध्याय श्री अमरमुनि जी महाराज के शिष्य पं० हेम चन्द जी महाराज व पं० श्री प्रेम चन्द विराजमान था। इन श्रमणों ने आप को दीक्षा पाठ पढाया। आप साध्वी श्री स्वर्णकांता जी की शिष्या घोषित हुई। साध्वी वनते ही आप ने शास्त्रों का सूक्ष्म अध्ययन शुरू कर दिया। कई शास्त्र कंठस्थ किए। कई विद्वानों से व

अपनी गुरूणी से शास्त्रों का स्वाध्याय किया। शास्त्र अध्ययन के साथ साथ आप ने दूसरे धर्मों के ग्रंथों का तुल्नात्मक अध्ययन किया। आप की संसार के सभी धर्मों की झलक आप के प्रवचन में मिलती है।

साध्वी श्री का आभा मण्डल हर व्यक्ति पर अपनी छाप छोड़ जाता है। आप का जैन ज्योतिष, मंत्र शास्त्र पर अच्छा अधिकार है। आप गुप्ततपस्विनी, सरलात्मा हैं। आप के दिशा निर्देश में हम दोनों को वहुत से कार्य सम्पन्न करने का सुअवसर मिला है। आप वहुत ही करूणामय आत्मा हैं। आप ने धर्म के ज्ञान के साथ-साथ वहुत सी भाषाओं का अभ्यास किया है। आप ने पंजाव विश्वविद्यालय से वी.ए. तक की शिक्षा अर्जित की है। हमारे सारे कार्यक्रम आप के आशीवाद व प्रेरणा से सम्पन्न होते हैं। आप जैसा विनयवान सरलात्मा विरला ही मिलता है। भगवान महावीर का कथन है "सरल आत्मा में धर्म ठहरता है।" आप पर पूर्ण घटित होती है। आप सहजता, सरलता व करूणा की प्रतिमा हैं। आप भव्य आत्मा हैं। आप का जीवन उस फूल की भांत है जिस में सुन्दरता भी है सुग्रंधि भी है। आप का जीवन लाखों जीवों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत वना है। हम भाग्यशाली हैं कि हमें आप के निर्देशन में अनेकों सेवा के कार्य करने की वलवती प्रेरणा मिलती है। आप की दिशा निर्देशन में जहां दीक्षा समारोह होते हैं वहां पंजावी ग्रंथों का प्रकाशन, अवार्डों की स्थापना व संस्थाओं का निर्माण आप की प्रेरणा प्रमुख है।

आप की देख रेख में कई समारोह अम्वाला में सम्पन्न हुए हैं। स्व० गुरूणी स्वर्णकांता जी महाराज की आप सलाहकार शिष्या हैं। उन्होंने हर मामले में आप की राय पूछी। अगर इतनी महान साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज

आप सुधा जी से सलाह लेती तो इस में कोई ना कोई बात जरूर है। मेरे धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन पर आप का वरद हाथ है। आप साक्षात सरस्वती है। जैन समाज को आप से बहुत आशाएं हैं। आप जैन धर्म की प्रभाविका व क्रांन्तिकारी साध्वी है। आप नवीन और प्राचीन संस्कृति का जीता जागता प्रमाण हैं। आप महान प्रेरिका हैं। लाखों लोगों को दान की प्रेरणा देती रहती हैं। आप की प्रेरणा कभी खाली नहीं जाती। हमारे परिवार पर आप का महान आशीवाद सदैव बना रहता है।

आप महान भाग्यशाली साध्वी हैं। आप की शिष्याएं भी आप के जीवन से प्रेरणा लेती रहती हैं। आप सदैव श्री संघ की प्रभावना के लिए काम करती हैं। उन्होंने कई बार अभिग्रह पूर्वक तप किया है। आप अपनी गुरु गुरुणी स्वर्णा की प्रतिमूर्ति हैं। जहां तक मुझे याद है ऐसा कोई अवसर नहीं आया, जब आप ने हमें कुछ न कुछ करने की प्रेरणा न दी हो, आप जहां भी चर्तुमास करती हैं लोगों को साधना करने की प्रेरणा देती रहती हैं। हर प्रकार की धर्म शिक्षा बाल-वृद्ध को प्रदान करती हैं। स्वाध्याय के प्रति रूची बने, इस के लिए बच्चों को धर्म शिक्षा प्रदान करती हैं। माला आदि धर्म उपकरण अपने आशीवाद के रूप में हर धर्म, जाति वर्ण का ध्यान रख कर भेंट करती हैं। आप महान साध्वी हैं। आप का जीवन अप्रमाद का उदाहरण है। आप की प्रेरणा से कुष्प में साध्वी स्वर्णकांता जैन पुस्तकालय निर्माण आदिश्वर धाम में हो चुका है। आप की प्रेरणा से अनेकों चारित्रात्मओं ने संयम ग्रहण कर स्व पर का कल्याण किया है। आप श्रावक श्राविका को बहुत बहुमान देती है। आप सदैव कहती हैं "भगवान महावीर साधु व श्रावक दोनों का जोड़ा हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक

हैं। धर्म साधना में जहां श्रावक, साधु को आहार पानी वहरा कर धर्म लाभ प्राप्त करता है वहां साधु साध्वी भी अपनी आशीवाद श्रावक को प्रवचन के रूप में प्रदान करते हैं। साधू श्रावक को ध्यान साधना की विधि वतलाते हैं। धर्म उपदेश देकर दान-शील-तप-भावना दृढ़ करते हैं।''

गुरूणी सुधा प्राचीन श्रमणी के अनुरूप जीवन को तप द्वारा अनुशाषित करती हैं। वह श्रावक को 'अम्मापिया' समझ कर उन्हें सदमार्ग पर लाती हैं। हम दोनों को उन्हें वहुत क़रीव से देखने को मौका मिला है। अनेकों कष्टों में वह घवराती नहीं। वह स्वयं तपस्या करती हैं और अपनी शिष्याओं को तपस्या व स्वाध्याय करने की सतत प्रेरणा देती रहती हैं। धर्म के प्रति वह वच्चों में आर्कषण पैदा करती हैं। इस के लिए वाल गोष्टियों का आयोजन होता हैं। नवयुवकों को वह सप्तकुव्यसनों का त्याग करवाती हैं। उनकी सेवा का उदाहरण हमें अनेकों वार देखने को मिला। कभी भी कोई साध्वी विमार पडे, तो उसी समय अपना सारा ध्यान उसके उपचार की ओर देती हैं। अपनी गुरूणी की वीमारी का जव आप को पता चला, तो आप गंगानगर में थीं। एक दिन में ६० किलोमीटर लम्वा नीमा मात्र कुछ दिनों में अम्वाला पहुंचे। अपने पांव की वीमारी पर कोई ध्यान नहीं रखा। वह जैन एकता की प्रतीक हैं। सभी लोग उन्हें अपना मानते हैं।

लगभग ३ साल गुरूणी जी वीमार रहे। अपनी गुरूणी स्वर्णकांता की दिन रात जाग कर आपने सेवा की। इस संघ की हर छोटी वडी साध्वी ने वैसे तो साध्वी स्वर्णकांता जी महाराज की तन मन से सेवा की। पर साध्वी राजकुमारी जी महाराज व साध्वी श्री सुधा जी महाराज का नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। अपनी शिष्या परिवार के स्वास्थय शिक्षा का आप को सदैव ध्यान रहता है। हमारी

हर रचना में उनका विमर्श, दिशा निर्देश हमें मिलता रहा है। जीवन के हर मोड़ पर हमें हर मामले में आप का दिशा निर्देश मिला है। आप की सद्प्रेरणा से महाश्रमणी अभिनन्दन ग्रथ व सचित्र भगवान महावीर जीवन चारित्र लिखने का सौभाग्य हमें मिला।

आप का दार्शन मांगलिक है। आप में पूज्य गुरूणी स्वर्णकाता का तप तेज झलकता है। बडे वडे से मामले में आप अपनी सहजता सरलता से काम लेती हैं। आप का जीवन क्षमा का प्रत्यक्ष प्रमाण है। क्षमा आप का जीवन है। आप का श्रृंगार है। हर वात में दया झलकती है। सव से वडी वात है कि आप सव जैनों को भाई मान कर जैन एकता को मजवूत करती हैं। आप के चरणों में जैन के सभी सम्प्रदायों के लागू सुख शांति महसूस करते हैं। आप का पुण्य चहुतरफा देखा जा सकता है। आप जहां विराजते हैं उस श्री संघ को चार चांद लग जाते हैं। आप में सहधर्मी वात्सलय का भाव कूट कूट कर भरा हुआ है। आप गरीवों व सहधर्मी का वहुत ध्यान रखती है। आप समाज को गरीव, यतीमों वेसहारा वहिन भाईयों के उत्थान की प्रेरणा देती रहती हैं। आप ने कई ऐसी संस्थाओं का निर्माण स्थानिय स्तर पर किया है जो स्थानिय संघ की मदद से उन पिछड़े लोगों की सहायता करते हैं। आप ने गुरूणी साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के देवलोक के वाद अम्वाला में एक कम्पयूटर सैंटर खुलने जा रहा है।

आप के दर्शन का लाभ किसी खुशनसीव को होता है। आपका जीवन सुहृदता व प्रेम का संदेश है। हम भी उन भाग्यशाली लोगों में से हैं जिन्हें आप की प्रेरणा व दिशा निर्देश में कार्य करने का अवसर मिला है। गुरूणी जी के स्वर्गवास के वाद आप ने उनके कार्य रूपी मिशाल को हाथों

में थामा है। आप ने शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थीयों को विना भेदभाव से सहायता की है।

साध्वी (डा०) स्मृति जी महाराज :

साध्वी स्वर्णकांता जी महाराज की शिष्याओं में सभी साध्वीयां शैक्षिक योग्यताओं की धनी हैं। इन में एक तरूण साध्वी डा. स्मृति जी हैं। जिन्हें स्वयं गुरूणी स्वर्णकांता जी महाराज अपनी शिष्याओं में कोहेनूर हीरा कहती थीं। साध्वी स्मृति जी, साध्वी सुधा जी की शिष्या हैं। आप जन्म अम्बाला के सुश्रावक सेठ तरसेम कुमार जैन व माता शशिकांता जैन के यहां १७ मई १९६९ को हुआ। माता पिता के धार्मिक संस्कार आप के जीवन में सहायक बने। आप को अल्पायु में गुरूणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। फिर छोटी अवस्था में वैराग्य के बीज पनपने लगे।

आप ने दसवीं की परीक्षा पूज्य कांशी राम जैन सीनीयर सैकण्डरी स्कूल से उतीर्ण की। फिर गुरू चरणों में रह कर स्वाध्याय करना शुरू किया। माता पिता की आप लाडली संतान थीं। घर वाले नहीं चाहते थे कि आप साध्वी जीवन का कठोर मार्ग ग्रहण करें। माता पिता ने आप को बहुत समझाया। साधु जीवन के परिषहों के बारे में समझाया। पर आप पर संयम का मजीठी रंग चढ़ चुका था। आप अपने ईरादे पर दृढ़ रहीं। संसार का वास्तिवक स्वरूप आप को समझ आ चुका था। जन्म मरण की लम्बी परम्परा को काटने का निदान संयम है। आप की इच्छा बलवती होती रही। आप ने स्थानीय जैन कालेज से बी.ए. किया। फिर गुरूचरणों में आ गईं।

मैने आप को पानीपत में वैरागन अवस्था में स्व. भण्डारी पद्म चन्द जी महाराज के चतुर्मास में देखा

था। उसके बाद आप ने हिन्दी भाषा में एम.ए. की परीक्षा संपूर्ण की। अब घर में मन नहीं लगता था। माता पिता के सारे प्रलोभन आप को संयम मार्ग पर बढ़ने से रोक न सके। आप की दीक्षा १६ फरवरी १६६१ को सफीदोंमण्डी में सम्पन्न हुई। आप के साथ साध्वी श्रुति की दीक्षा सम्पन्न हुई।

साध्वी बनने के पश्चात आप ने पुनः शिक्षा ग्रहण करना शुरू कर दिया। आप ने संस्कृत में एम.ए. की परीक्षा कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से सम्पन्न की। आप समस्त कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में सब से ज्यादा अंक लेने वाली प्रमुख साध्वी बन गई। आप ने अपनी गुरूणी सुधा जी महाराज व बड़ी साध्वी स्वर्णा जी महाराज के निर्देश व शास्त्रों का स्वध्याय किया। आप ने कई बार बरसी तप किया है। आज कल भी आप ध्यान व तप में लीन रहती हैं। आप ने डा० धर्मचन्द जैन के निर्देशन में पी.एच.डी की परीक्षा पास की है। इस शोध कार्य की प्रेरणा हम दोनों ने साध्वी श्री को दी थी। इस से पहले हम ऐसी प्रेरणा (डा०) मुनि शिव कुमार जी महाराज को दे चुके थे। हमें प्रसन्नता है कि मुनि शिव कुमार जी महाराज को बाद में श्रमण संघ ने अपना चतुंथ पट्धर बनाया है। आप श्री की तरह, साध्वी श्री को हमारी सतत प्रेरणा रही कि आप श्रावकाचार के ग्रंथ उपासक दशाग सूत्र पर कार्य करें। साध्वी श्री ने एम.ए. के पश्चात पी.एच.डी. के लिए तैयार नहीं थी। परन्तु हम ने बडे महाराज साध्वी श्री स्वर्णकांता जी को प्रार्थना कर इस की आज्ञा दिला दी। साध्वी श्री को उपासक दशांग सूत्र से संबंधित काफी साहित्य प्राप्त नहीं होता था। मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन ने साध्वी श्री स्मृति को जैन श्रावकाचार साहित्य उपलब्ध करवा दिया। डा० धर्म चन्द जी जैन के कुशल दिशा

निर्देशन से पहले आप ने संस्कृत की परीक्षा में विश्वविद्यालय का रिकार्ड तोड़ा था। अब उनके निर्देशन में पी.एच.डी. का कार्य सम्पन्न किया। आप के थीसस को बहुत ही सराहा गया है।

आप अपनी गुरूणी के अनुरूप सरलता, सादगी का जीता जागता प्रमाण हैं। आप अपनी गुरूणी जी के हर कार्य में सहयोगी रही है। आप अच्छी लेखिका हैं। आप ने अल्प समय में शास्त्रों का स्वाध्याय गुरूणी से किया है। आप ने कई भव्य जीवों को संयम प्रदान किया है।

आप ने आचार्य श्री आत्मा राम जी के अप्रकाशित आगम निरयावलिका सूत्र (१-५) के सम्पादक मण्डल के सदस्य के रूप में कार्य किया। फिर गुरूणी साध्वी श्री स्वर्णकांता जी की दीक्षा के ५०वें साल में आप ने अभिनंदन ग्रंथ के मुख्य सम्पादिका के रूप में कार्य किया है। इस अभिनंदन ग्रंथ में आप ने अपनी गुरूणी परम्परा का अच्छा शोधात्मक परिचय दिया है।

भगवान महावीर के २६०० साला महोत्सव पर सचित्र भगवान महावीर के सम्पादिका के रूप में कार्य किया है। आप की प्रेरणा से साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का ५०वां जन्म जयंती महोत्सव भव्य ढंग से मनाया गया। इस समारोह व अभिनन्दन ग्रंथ की तैयारी के विषय में अगले प्रकरण में उल्लेख करूंगा। इन साध्वी की कृपा से इतने बड़े लम्बे कार्य सम्पन्न हुए, जो जैन इतिहास का अंग बन गए। आप के कार्य जैन इतिहास व संस्कृति के सुनहरे पृष्ठ पर अंकित हैं।

इन साध्वीयों में से सभी साध्वीयां ज्ञान-दर्शन चारित्र में तालिन रह कर संयम की आराधना करती हैं। मुझे साध्वी स्मृति को करीब से पहचानने का अवसर मिला।